क्यों दम तोड़ रही है पीत क्रांति

डॉ. वाई. पी. गुप्ता

वर्ष 2006-07 में हमारी तिलहन पैदावार में 15.7 प्रतिशत कमी आई है। 2005-06 में भी इनकी पैदावार घटी थी। 2004-05 में इनकी पैदावार 2.48 करोड़ टन और 2003-04 में 2.51 करोड़ टन थी। 2002-03 में यह घटकर 1.54 करोड़ टन रह गई थी। क्या हमारी पीत क्रांति दम तोड़ रही है? हमारा तिलहन उत्पादन विश्व उत्पादन का 10 प्रतिशत है, और भारत को खाद्य तेल उत्पादन में विश्व का चौथा सबसे बड़ा देश माना जाता है।

देश में कमी के कारण तिलहनों के मुक्त आयात की नीति तिलहन उगाने वाले किसानों के लिए हानिकारक साबित हुई। साथ ही इस क्षेत्र में आत्म निर्भरता प्राप्त करने के लक्ष्य को हानि हुई। इससे देश खाद्य तेलों के आयात पर निर्भर हो गया। मलेशिया और इण्डोनेशिया से पाम तेल का आयात काफी बढ़ गया है।

हमारा उत्पादन वर्ष 1985-86 में 1.08 करोड़ टन था और वर्ष 1998-99 में बढ़कर 2.47 करोड़ टन हो गया था, यह पीत क्रांति का चर्मोत्कर्ष था। इसके बाद से तिलहन का उत्पादन गिरता ही जा रहा है। इनका वर्तमान उत्पादन हमारी बढ़ रही आबादी (1 अरब से अधिक) की खाद्य तेलों की पूर्ति करने में असमर्थ है। खाद्य तेलों की वर्तमान वार्षिक मांग 120 लाख टन है, जबकि हमारा उत्पादन केवल 70-80 लाख टन के बीच है। इस कमी को प्रति वर्ष आयात करके पूरा किया जाता है। भारत इस आयात के लिए करोड़ों रुपए की विदेशी मुद्रा व्यय करता है। वर्ष 2020 में प्रति व्यक्ति तेल की खपत 16 कि.ग्रा. प्रति वर्ष होने की उम्मीद है। इसकी मांग 2.08 करोड़ टन होगी जिसके लिए 6.0 करोड़ टन तिलहन का उत्पादन आवश्यक होगा।

खाद्य तेल भारतीय भोजन का एक महत्वपूर्ण घटक है। ऊर्जा के स्रोत के अलावा इनसे भोजन में विशिष्ट सुगंध और स्वाद बढ़ जाता है। इनसे शरीर ऊतकों को चिकनाहट भी मिलती है। इनकी प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष खपत 11.1 किलोग्राम है, जबकि विश्व का औसत 14.5 किलोग्राम और विकसित देशों में 26 किलोग्राम है। आर्थिक विकास और प्रति व्यक्ति आय में बढ़ोतरी से इनकी खपत में और बढ़ोतरी होने की संभावना है। लेकिन दैनिक आहार में वसा का योगदान 15-20 प्रतिशत कैलोरी से अधिक नहीं होना चाहिए।

गैर परपंरागत स्रोतों से भी लगभग 25 लाख टन तेल मिलने की संभावना है। लेकिन बमुश्किल केवल 8 लाख टन का ही उपयोग किया जा रहा है। इन स्रोतों से अधिकतम दोहन की नीति बनाने की आवश्यकता है। राइस ब्रान की मुख्य समस्या यह है कि यदि मिल से प्राप्त ब्रान से तुरंत तेल नहीं निकाला जाता तो इसमें मुक्त वसा अम्लों की मात्रा बढ़ जाती है। इसका काला रंग, उच्च गलन बिन्दु और गोंद की उपस्थिति अन्य समस्याएं हैं। पाम तेल सस्ता है। अतः पर्याप्त मात्रा में उपयोग किया जाता है और आयात किया जाता है। इसका आयात 4.5 लाख टन से ज्यादा हो गया है। आजकल तेल पाम की खेती पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। यह केरल और अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह में उगाया जा रहा है।

वर्ष 1998-99 में इन फसलों के अधिक उत्पादन का मुख्य कारण था कि तिलहन की खेती के क्षेत्र में लगभग 2.6 करोड़ हैक्टर की बढ़ोतरी हुई थी। ऐसा सम्मिलित प्रयास और टेक्नॉलॉजी मिशन के अंतर्गत प्राथमिकता दिए

जाने के कारण संभव हुआ था। इसका उद्देश्य तिलहन में आत्म निर्भरता पाना था। इसका तरीका किसानों के पास आधुनिक तरीके पहुंचाना, उन्हें प्रोत्साहन मूल्य और भंडारण तथा प्रोसेसिंग सुविधाएं उपलब्ध कराना था। राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड को तिलहन समितियां तथा गुजरात में मूंगफली के उत्पादन के विकास का कार्य सौंपा गया था। राष्ट्रीय तिलहन और वनस्पति तेल विकास बोर्ड को गैर-परंपरागत क्षेत्रों में तिलहन को लोकप्रिय करने का कार्य सौंपा गया था। मूंगफली, सरसों-रेपसीड, सोयाबीन और सूरजमुखी इन चार तिलहन फसलों के उत्पादन को बढ़ाने की परियोजना भी प्रारंभ की गई थी। समेकित तिलहन विकास कार्यक्रम अलग-अलग राज्यों में प्रारंभ किया गया था और इसमें 3000 तिलहन समितियां, 13 लाख किसान और 25 लाख हैक्टर भूमि सम्मिलित थी। हमारी तिलहन उत्पादकता अभी भी प्रति हैक्टर 944 कि.ग्रा. है जो विश्व की तिलहन उत्पादकता 1632 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की तुलना में बहुत कम है।

अब तिलहन क्षेत्र को बढ़ाने की संभावना नहीं है। पहले ये ऊर्जा प्रचुर फसलें अनेक विपदाओं से घिरी रहती थीं, कमजोर पर्यावरण में उगाई जाती थीं और कीड़ों तथा बीमारियों से घिरी रहती थीं। किसान अच्छा मुनाफा कमाने के लिए अधिक पैदावार देने वाले अनाज उगाना पसंद करते थे। लेकिन हाल में उन्नत बीज, बीजों में तेल की अधिक मात्रा, उत्पादन सुस्थिरता, रोग सह्यता, निवेश उपलब्धता और किसानों की अच्छी आमदनी हेतु अच्छी कीमत आदि प्रयास किए गए हैं।

तिलहन भारत की एक प्रमुख फसल है। यह देश में खाद्यान्न फसलों के बाद दूसरे नंबर पर है। अब इस क्षेत्र में दूसरी पीत क्रांति की आवश्यकता है। शुष्क खेती में तकनीकी महारत प्राप्त करना भी आवश्यक है। तिलहन में आत्म निर्भरता का लक्ष्य पूरा होने से भारतीय कृषि और देश की आर्थिक स्थिति पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ेगा। इससे आयातित तेल पर निर्भरता कम होगी और विदेशी मुद्रा बचाने में सहायता मिल सकेगी। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत मार्च 2008
अंक 230

- **कितने उचित हैं टाइगर फार्म?**
- **लंगूरों की विलुप्ति की खबरें**
- **किस-किसका नया साल**
- **भूखे और कुपोषित बच्चों का मध्यप्रदेश**
- **खेल की दुनिया में डोपिंग की समस्या**